International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 64-66

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में सामंतवादी व्यवस्था का चित्रण

चमकौर सिंह

प्रवक्ता, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, गुरु नानक कालेज, किलियांवाली, मुक्तसर, पंजाब, भारत।

सारांश

यादवेन्द्र ने यह सामंतवादी जीवन को बडे निकट से देखा है, यही कारण है कि उनके उपन्यासों में यथार्थिक सामंतवादी सभ्यता लक्षित होती है। राजस्थान, राजाओं, रजवाडों का प्रदेश होने के कारण सामंतवादी व्यवस्था को बडे गहरे ढंग से अपने परिवेश में छुपाए रखे हुए थे, और इन रजवाड़ो के सामाजिक परिवेश में सामंती जीवन की प्रत्येक विशेषता हमें अन्यायास ही दिखाई पड़ जाती है। यादवेन्द्र शर्मा ने अपने उपन्यासों मे सामंती संस्कृति पेश कर अपनी इन रचनाओं को आंचलिक यथार्थवादी, सामाजिक, एतिहासिक ग्रन्थ बना दिया है, इन रचनाओं को कोई भी संज्ञा दे दें, वहीं उचित प्रतीत होती है। यादवेन्द्र ने सामन्तवादी उपन्यासों मे सामंतवादी व्यवस्था के प्रत्येक बारीक से बारीक पहलु पर अपनी पैनी नज़र और समझ से कलम चलाई है। जैसे सामंती रहन–सहन, खान–पान, सामंती प्रथाएं, राजनैतिक षडयंत्र, विलासता, दास–दासियों की दैन्य दशा, कुप्रथाएं, सामन्तों की प्रवृतियां, आर्थिक शोषण आदि, यादवेन्द्र ने 'दिया जला दिया बुझा', मिट्टी का कलंक, खम्मा अन्नदाता, ठकुराणी, पत्थर के आंसू, रक्त–कथा, ज्नानी उ्योडी, राजा–महाराजा, रानी महारानी, सिंहासन और हत्याएं, कथा एक नरक की, रंग महल, बूंद–बूंद रक्त, ढोलन कुंजकली, प्रतिशोध, रुप रक्त और तख़त, उपन्यास अपने परिवेश में इसी सामंती व्यवस्था को लिए हुए हैं।

वस्तुतः चन्द्र जी के उपन्यासों में सामंती परिवेश का जो यथार्थ चित्रण हुआ है। वह अत्यन्त मार्मिक, उत्तेजक एंव सामन्तों की विलासप्रियता का प्रमाण है, शोषण की क्ररुता, अत्याचार की प्रकाष्ठा, अनैतिक्ता, झूठी शान, ईर्ष्या द्वेष, वैमनस्य आदि प्रवृतियां का निरुपण इस परिवेश का परिचायक हैं।

मूलशब्द: यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', सामंतवादी व्यवस्था, सामंती संस्कृति

प्रस्तावना

रोमन साम्राज्य के विघटन के बाद पश्चिमी यूरोप में नई व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसे सामंतवादी व्यवस्था की संज्ञा दी गई। सामंतवादी शब्द की उत्पत्ति लातिनी शब्द 'फयूडम (Feudum) से हुई, जो अंग्रेजी में 'फ़ीफ (Fief) बना। सामंतवादी व्यवस्था में मुख्य स्थान सरदारों का ही होता था, जो अपनी सेनाओं की सहायता से भूमि के एक बडे भाग पर अपना अधिकार बनाए रखते थे और दूसरी ओर राजा भी एक शक्तीशाली सामंतवादी सरदार होता था। समय के साथ, राजा अधिक शक्तिशाली होते गये, और छोटे सरदारों की शक्ति कम करने हेतु, उनके अधिकार क्षेत्र में भूमि को मान्यता देकर उनके बदले अपने प्रति निष्ठा और सेवा का वचन लेते थे, इसी तरह सरदार अपने से छोटे सरदारों को भूमि के कुछ हिस्से देकर अपने प्रति निष्ठा और सेवा का वचन ले लेते थे। इस तरह सामंतवादी व्यवस्था में भू–स्वामियों का ही बोल बाला था, और यह ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें बाहर से कोई दखल नहीं कर सकता था, दसवीं शताब्दी से भारत में सामंतवादी व्यवस्था का आरंभ हुआ इस समय समाज के कुछ विशेष वर्ग के लोगो की शक्ति बढ़ी जिन्हें सामन्त, रासक, अथवा राजपूत कहा जाता था, इन लोगों की हैशियत भी अपनी–अपनी शक्ति के आधार पर अलग–अलग थी। कुछ का कुछ गावों पर अधिकार होता था, इस तरह सभी अपने अधिकार क्षेत्र बढ़ाने हेतु आपस में लड़ते रहते थे।

यादवेन्द्र ने यह सामंतवादी जीवन को बडे निकट से देखा है, यही कारण है कि उनके उपन्यासों में यथार्थिक सामंतवादी सभ्यता लक्षित होती है। राजस्थान, राजाओं, रजवाडों का प्रदेश होने के कारण सामंतवादी व्यवस्था को बडे गहरे ढंग से अपने परिवेश में छुपाए रखे हुए थे, और इन रजवाड़ो के सामाजिक परिवेश में सामंती जीवन की प्रत्येक विशेषता हमें अन्यायास ही दिखाई पड़ जाती है। यादवेन्द्र शर्मा ने अपने उपन्यासों मे सामंती संस्कृति पेश कर अपनी इन रचनाओं को आंचलिक यथार्थवादी, सामाजिक, एतिहासिक ग्रन्थ बना दिया है, इन रचनाओं को कोई भी संज्ञा दे दें, वहीं उचित प्रतीत होती है। यादवेन्द्र ने सामन्तवादी उपन्यासों मे सामंतवादी व्यवस्था के प्रत्येक बारीक से बारीक पहलु पर अपनी पैनी नज़र और समझ से कलम चलाई है। जैसे सामंती रहन–सहन, खान–पान, सामंती प्रथाएं, राजनैतिक षडयंत्र, विलासता, दास–दासियों की दैन्य दशा, कुप्रथाएं, सामन्तों की प्रवृतियां, आर्थिक शोषण आदि, यादवेन्द्र ने 'दिया जला दिया बुझा', मिट्टी का कलंक, खम्मा अन्नदाता, ठकुराणी, पत्थर के आंसू, रक्त–कथा, ज्नानी उ्योडी, राजा–महाराजा, रानी महारानी, सिंहासन और हत्याएं, कथा एक नरक की, रंग महल, बूंद–बूंद रक्त, ढोलन कुंजकली, प्रतिशोध, रुप रक्त और तख़त, उपन्यास अपने परिवेश में इसी सामंती व्यवस्था को लिए हुए हैं।

सामंती व्यवस्था में राजा महाराजाओं की वेशभूषा भव्य होती थी, हीरे जवाराहत के अभूषण पहने जाते थे, रानियां भी लहंगा, कांचली, कुर्ती और ओढ़ना पहनती थी, और रानियों को आभूषणों में विशेष लगाव दिखाई देता है, निरामिष आहार और सुरापान का प्रचलन अत्याधिक होता था स्त्रियां भी शराब का सेवन करती थी। "यहां रानियां शराब पीती ही नहीं, शराब और दूध में स्नान तक कर लेती है।"[1]

उपन्यास जनानी उ्योढ़ी की जोखी अपने सुरापान कारण बताती हुई कहती है– "यहां सुरापान एक दवा है, उसके बिना दयालु और क्रूर पुरुषों की वासना को नहीं झेला जा सकता।"[2] शराब के अतिरिक्त सामन्तवादी परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति अफीम की लत में शामिल होता था, अतिथि के आगमन पर अफीम की प्रस्तुति उत्तम मानी जाती थी। सामन्तो ने अपनी सुख–सुविधा, आयाशी हेतु प्रथाएं बनाई हुई थी, जिन्हें तोड़ना आत्माहत्या माना जाता था, राजाओं की

[1] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, खम्मा अन्नदाता, पृ. 35
[2] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, जनानी डयोडी, पृ. 24

सवारियां धूम–धाम से निकाली जाती थी, राजा हाथी पर सुशोभित स्वर्ण सिंहासन पर बैठकर लाम–लशकर को साथ लेकर बैंड–बाजों के साथ जब बाजारों से निकलता था, प्रजा हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर राजा, का अभिवादन करती थी, नंगे सिर राजा के सामने आना राजा का अपमान माना जाता था, प्रजा बच्चों को भी टोपी पहनाकर ही राजा के सामने आती थी।

सामंती व्यवस्था का दूसरा नाम ही ऐश, सुख, प्राप्ति, प्रजा का शोषण, सुरापान औरतों को प्राप्त करना था, इसके लिए जरुरी था सत्ता की प्राप्ति, इसी लिए सभी का संघर्ष सत्ता प्राप्ति हेतु होता था। सत्ता प्राप्ति के लिए भाई, पिता, मित्र किसी की भी हत्या करना आम बात होती थी। ठाकुर जसवंत सिंह 'दिया जला, दिया बुझा' उपन्यास में अपने बडे भाई को षडंयंत्र का शिकार बना कर सभी गांव अपने नाम कर लेता है।"[3] ''ठकुराणी' में पद्मसिंह महाराज धिराज की पद्वी प्राप्ति हेतु हत्या के लिए डाक्टर को पचास हजार रुपए देकर अपने पिता को मरवा देता है।''[4]

"डाक्टर! तुम कितने भोले हो..... राजनीति का क, ख, ग, भी नहीं जानते। शायद तुम यह नहीं जानते कि हर राजा का बेटा यही सोचता है कि कब उसका बाप मरे और कब वह सिंहासन पर बिराजे।"[5]

प्रजा का खून और जिस्म चूसना सामन्तों का विशेष लक्षण था, गांव की प्रत्येक सुन्दर कन्या पर उनकी नज़र रहती थी, राजा–महाराजा तो अपनी वासना पूर्ति हेतु नित्य 'चाम–टैकस' लगाते रहते थे, जिसमें प्रत्येक गांव की लड़की को विवाह के उपरान्त सबसे पहले राजा के साथ बिस्तर साझां करना पड़ता था, फिर अपने पति के साथ। अपनी इन्हीं कामवास्नाओं को सन्तुष्ट करने के लिए राजा –महाराजा, जागीरदार कुटनियों के माध्यम से जाल बिछाते थे। यहीं कुटनियां गांव की सुन्दर लड़कियों को जाल में फंसा कर राज महल पहुंचाती रहती है। इसी वासनायुक्त प्रवृति को लक्षित यह कथन देखिए –'दिया जला दिया बुझा' मे ठाकुर जसवंत सिंह का यह कथन –"पहले यह बता कि आजकल अपने गांव में सबसे चोखी छोरी कौन है।"[6] 'बूंद–बूंद रक्त' मे गोपाल सिंह की कुटनी अकासी एक निर्धन परिवार की अमरती को ले आती है।"[7] 'ठकुराणी' में नैना और जमना कुटनियों के माध्यम से ही जनानी ड़योढ़ी मे पहुंचती है। जनानी डयोढ़ी में रहने वाली नारियों के साथ अमानवीय व्यवहार होता था, किसी नई सुन्दर लडकी आने पर तो इनका जीवन नरकीय बन जाता था।

सामन्ती व्यवस्था में एक ऐसा वर्ग था, जिनका जन्म से ही नरकीय जीवन शुरु हो जाता था, यह लोग गुलामी करने के लिए ही पैदा होते थे, इनकी हर सांस पर सामंतो का कब्जा होता था, कब उठना है, कब बैठना है। कब मरना है, कितना जीना है, सब सामंतो के रहमो–करम पर चलता था। 'ठकुराणी' उपन्यास मे अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु एक गुलाम का बिना किसी दोष के गोली से उडा दिया जाता है। इन दासों को अनेक बार अपनी रानियों, ठकुरानियों की वासना को भी शांत करना पडता था। 'दिया जला दिया बुझा' मे ठकुराणी वत्सला का निमंत्रण अस्वीकार कर देने पर वह लघिया पर अपनी इज्ज़त लूटने का आरोप लगा देती है। जिसके परिणामस्वरुप कोड़ों द्वारा उसे प्रताड़ित करके कोठरी में बंद कर दिया जाता है। दासियों की स्थिति तो इनसे भी ज्यादा भयानक और तरस योग थी। वे इन सामन्तों की इच्छा की गुलाम थी, दासियां मात्र एक पदार्थ थी। समान थी, न तो उनमें हृदय होता था न मस्तिषक। उन्हें एक मशीन की तरह अपने मालिक की आज्ञा का पालन करना होता था। सामन्तों के लिए वह मात्र वासना पूर्ति का साधन थी। 'ठकुराणी' उपन्यास में ठाकुर की पुत्री के विवाह में हवेली की समस्त दासियां बारातियों के विलास की सामग्री बनती हैं। दासियों को दोनों तरफ से दण्डित होना पड़ता था। राजा की तरफ से भी, रानी की तरफ से भी, सुन्दर होने के कारण राजा की भोग की वस्तु बनती थी तथा परिणामस्वरुप रानियों के दण्ड का पात्र बनती थी। 'बूंद–बूंद रक्त' में सिबली अपनी कथा को स्पष्ट करते हुए कहती है–"आपने मुझ पर जबरदस्ती की, मगर यदि पटरानी जी को मालूम हो गया तो वे मुझे कोल्हू में पिसवा देंगी। हम गोलियों की जीवन चींटी के बराबर ही होता है, सिर्फ चुटक्यिों में मसला जाता है।"[8]

सामंती जागीरदारों ने अपनी सुविधा हेतु अपनी इच्छानुसार कुप्रथाओं को जन्म दिया हुआ था, बहु विवाह, अनमोल विवाह, दहेज प्रथा जैसी प्रथाएं उस समय की प्रवृतियां थी।

"सिंहासन और हत्याए' में महाराज उजब सिंह के महल में पटरानी अम्बादे के अतिरिक्त इक्ततीस अन्य रानियां थी, एक से अधिक विवाह करना सामंत अपनी आन समझते थे। सामंत झूठी शान बनाने हुते अपनी बेटियों से ज्यादा मर्यादा को महत्व देते थे, इसी कारण अनमेल विवाह का प्रचलन बढ़ता गया। 'ठकुराणी' का ठाकुर उतलास सिंह अपनी रुपवती बेटी केसर का विवाह लक्वा से पीढ़ित, अपंग, कुरुप परन्तु ठिकानेदार रवीब सिंह से करने का निश्चय कर लेता है। इसके साथ ही दहेज प्रथा भी सामंती जीवन का परिअंग बन गई थी। 'बूंद–बूंद रक्त' में महाराज मानसिंह को उसके ससुर दहेज में एक सौ एक घोडे, ग्यारह हाथी, इक्कीस नागौरी बैलों वाले रथ, इक्यावन दास, इक्यावन दासियां देता है।

सामंत तत्कालीन व्यवस्था के कर्णधार खुद होते थे, सामन्तों का कानून उनका जूता होता था।

'ढोलन कुंजकली' की कुंजकली के शब्दों में –"इन राजा सामन्तों के न्याय की कोई किताब नहीं है, इनका न्याय है, इनका जूता, इनकी इच्छा"[9] दास–दासियों के दण्डित करने का तरीका बडा घृणित व अमानवीय होता था, 'जनानी ड्योडी' में रुप रस को आज्ञा की थोडी सी अवहेलना करने पर दस कोडों की सज़ा के अतिरिक्त दो दिनों तक सिर्फ पांव सेर दूध दिया जाता है। और महारानी उसकी गालों पर डोम चिपकाकर कुरुप बना देती है। 'बूंद–बूंद रक्त' में ठाकुर गोपाल सिंह, जिसकी नाक, जैसली प्रतिशोध स्वरुप काट लेती है, दण्ड देने हेतु आज्ञा देता है....." उसे खोलते हुए तेल की कढ़ाई में डाल दो। उसे मेरे पास हाज़िर करो। मैं उसे बिच्छुओं वाले तहखाने मे डाल दूंगां।"[10]

भोग विलासता को ही जीवन मानने वाले यह कायर सामंत अपनी कायरता को छुपाने हेतु दलितों पर अत्याचार कर अपनी मर्दानगी का प्रमाण देते है। और इनकी इस मानसिक सन्तुष्टि का माध्यम बनते थे गरीब दास और दासियां।

सामाजिक धार्मिक, मानसिक, शारीरक शोषण के साथ–साथ आर्थिक शोषण भी सामंतीवादी व्यवस्था की विशेषता थी, सामंतवादी लोग अपने भोगविलास को आर्थिक शोषण के बल पर ही शांत करते थे, सामन्तों ने पैसा इक्कट्ठा करने के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं तथा टैकस लगाये हुए थे। जिसमें राजा को मिलने के लिए 'मुजरा' किया जाता था, जिसमें कुछ भेंट भी दी जाती थी, राजा को उच्च जाति के व्यक्ति कुछ धनराशी भेंट कर पांव में सोना पहनने का अधिकार ले जाते थे, आर्थिक शोषण का सबसे सस्कत माध्यम था, किसानों पर टैक्स। 'मिट्टी का कलंक' में किसानों पर लगने वाले अनेक प्रकार के टैक्स इस प्रकार हैं –

1. वर्षा होते ही दो आदमी खेत की जुताई के लिए

[3] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, दिया जला दिया बुझा, पृ. 72
[4] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, ठकुरानी, पृ. 226
[5] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, खम्मा अन्नदाता, पृ. 26
[6] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, दिया जला दिया बुझा, पृ. 52
[7] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, बूंद–बूंद रक्त, पृ. 62
[8] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, बूंद–बूंद रक्त, पृ. 6
[9] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, ढोलन कुंजकलि, पृ. 104
[10] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, बूंद–बूंद रक्त, पृ. 66

2. धान पैदा हो जाने पर खेत में घास–फूस की सफ़ाई के लिए दो आदमी देना।
3. अन्न पक जाने पर चारा अन्न देना, चौथाई रुप में और लगाान अलग से।
4. ठाकुर के घरवालों, दास–दासियों और पशुधन के लिए पानी का मुफ्त प्रबन्ध करना।
5. गांव का आधा पशुधन गांव वालों का और आधा ठाकुर का।
6. हुक्के की लाग पांच रुपए।
7. दूध का लाग पांच रुपए।"[11]

'ठकुराणी' तथा 'जनानी डयोढ़ी' में भी इस प्रकार की विचित्र लाग का परिचय मिलता है, चाहे अकाल पड़े या खेती को कीड़ा खा जाए परन्तु इस लाग को अत्यन्त निर्ममतापूर्वक वसूला जाता था। न देने की स्थिति में किसानों के गाय बैल भी खुलवा लिये जाते। आर्थिक शोषण में बेगार भी एक महत्वपूर्ण साधन थी। जिसमें बिना परिश्रम दिये शारीरक श्रम करवाया जाता था। 'प्रतिशोध' में महल को शीर्घ पूर्ण कराने हेतु सैकड़ो मजदूरों से निर्ममतापूर्वक बेगाार करवाई जाती है। और उन्हें आधा पेट भोजन दिया जाता है।

वस्तुतः चन्द्र जी के उपन्यासों में सामंती परिवेश का जो यथार्थ चित्रण हुआ है। वह अत्यन्त मार्मिक, उत्तेजक एंव सामन्तों की विलासप्रियता का प्रमाण है, शोषण की क्ररुता, अत्याचार की प्रकाष्ठा, अनैतिक्ता, झूठी शान, ईर्ष्या द्वेष, वैमनस्य आदि प्रवृतियां का निरुपण इस परिवेश का परिचायक हैं।

सन्दर्भ सूची

1 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': दीया जला दीया बुझा 2009, अरुण प्रकाशन, ई–54, मान सरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली–32
2 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': मिट्टी का कलंक, 1992, गड़ोदिया पुस्तक भण्डार, बीकानेर।
3 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': खम्मा अन्नदाता 1958, कविता प्रकाशन तेलीवाड़ा, बीकानेर।
4 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': ठकुराणी 1964, शांति पुस्तक मंदिर, 71, ब्लाक के, लाल क्वाटर, कृष्ण नगर, दिल्ली–51
5 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': रक्तकथा 1994, प्रवीण प्रकाशन, 1/1079, ई महरोली, नई दिल्ली–30।
6 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': जनानी ड्योढ़ी 1972, नैशनल पबलीशिंग हाऊस, 2/35, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–2।
7 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': ढोलन कुंजकली 1982, नार्थ इंडिया पब्लिशर्ज एंड डिस्ट्रीब्यूटर्ज, फेस–ई 1/265, गली नं. 17, सोनिया विहार, दिल्ली।
8 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र': चांदा सेठानी 2003, परमेशवरी प्रकाशन, बी–109, प्रीत विहार, दिल्ली–92
9 यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, बूंद–बूंद रक्त,

[11] यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, मिट्टी का कलंक, पृ. 54